4

WOODS

हिंदी दर्पण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

हिंदी दर्पण–4

1. सूरज का गोला

(क) 1. किरणें 2. गाँव-गली में 3. मेरे बुलाने से 4. सूर्य के लिए **(ख)** फिर तो जाने कितनी बातें हुईं! कौन गिन सके इतनी बातें हुईं! पंछी चहके कलियाँ चटकीं डाल-डाल चमगादड़ लटकीं गाँव-गली में शोर मच गया, जंगल-जंगल मोर नच गया! **(ग)** 1. सूरज ने हमें, तुम्हें, इसे, उसे, चिड़ियों, पत्तों, फूल-फलों, बीजों को जगाने की बात की। 2. सूरज निकलने पर पंछी चहके कलियाँ चटकीं, डाल-डाल पर चमगादड़ लटकीं। गाँव-गली में शोर मच गया, जंगल-जंगल मोर नाचा। 3. कविता में किरणों के ज़्यादा फैलने की बात की गई है। 4. आसमान का पट खुलते ही सूर्योदय हुआ। 5. गली-गली में सूरज निकलने का शोर मच गया। **भाषा की बात–(क) सूरज**–सूर्य, दिनकर, दिवाकर **फूल**–पुष्प, कुसुम, सुमन **जंगल**–वन, अरण्य, कानन **आसमान**–आकाश, नभ, अंबर **(ख)** उजाला, शांति, स्फूर्ति, मृत्यु, सोना, अस्त **(ग)** सुंदर, कोमल, नीला, सुनहरी, घना, गर्म **(घ)** 1. सत्य 2. प्रसन्नता 3. मिठास 4. सौंदर्य **करने की बारी**–स्वयं करें।

2. परिश्रम का फल

(क) 1. आलसी 2. रामदास 3. हंस के 4. ये दोनों 5. सफ़ेद हंस **(ख)** 1. 7 2. 7 3. 3 4. 3 **(ग)** 1. रामदास धनी किंतु बहुत आलसी व्यक्ति था। 2. रामदास को उसके आलस व कुप्रबंध के कारण हानि हो रही थी। 3. सीताराम ने रामदास को दरिद्रता दूर करने का यह उपाय बताया–''मानसरोवर पर रहने वाला एक सफ़ेद हंस सबके जागने से पहले ही पृथ्वी पर आता है। वह दोपहर को लौट जाता है जो भी सबसे पहले उसका दर्शन कर लेता है, उसे जीवन में किसी बात की कमी नहीं रहती।'' 4. रामदास प्रात:काल होते ही अपने खलिहान के पास जाकर हंस की खोज में बैठ गया। तभी उसने देखा, कि एक आदमी उसके ढेर से अनाज अपने ढेर में डालने के लिए उठा रहा है। रामदास को देखकर वह लज्जित हो गया और क्षमा माँगने लगा। खलिहान से वह घर लौट आया और गौशाला में चला गया। वहाँ नौकर गाय का दूध दुहकर अपनी पत्नी के लोटे में डाल रहा था। रामदास ने उसे डाँटा। घर पर जलपान आदि कर वह हंस की खोज में पुन: खेत पर गया। उसने देखा, कि खेत पर अब तक मज़दूर नहीं आए थे। वह वहाँ रुक गया। कुछ देर बाद मज़दूर आए, तो उसने देर से आने पर उन्हें डाँटा। इस प्रकार आए दिन उसकी होने वाली हानि रुक गई और उसकी हालत में सुधार आ गया। 5. सीताराम ने रामदास को सफ़ेद हंस का अर्थ परिश्रम करना बताया। **भाषा की बात–(क)** कुप्रबंध, विपत्ति, अवश्य, व्यवस्था, उपस्थिति, परिश्रम **(ख) म्म**–अम्मा, निकम्मा **न्न**– अन्न, खिन्न **द्द**–रद्द, भद्दा **(ग)** 1. वह 2. मैं, उसे 3. उसने 4. जो, जैसा, उसे, वैसा **करने की बारी**–स्वयं करें।

3. पचमढ़ी

(क) 1. देनवा 2. सतपुड़ा 3. रजत प्रपात 4. 300 फुट **(ख)** 1. 7 2. 7 3. 3 4. 3 5. 3 **(ग)** 1. महादेव गुफ़ा शंकर जी का स्थान है। इस गुफ़ा की लंबाई 300 फुट है। गुफ़ा के बीच में पानी का एक कुंड है, जिसके पास शंकर जी की सुंदर मूर्ति स्थापित है। गुफ़ा में हल्का-हल्का प्रकाश आता है। 2. बीफॉल में 150 फुट की ऊँचाई से निर्मल जल की गिरती धारा चाँदी की तरह चमकती है। इसीलिए इसे 'रजत प्रपात' कहते हैं। 3. हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद के नाम पर ही 'राजेंद्र गिरि' का यह नाम पड़ा। 4. धूपगढ़ सतपुड़ा पर्वत श्रेणी की सबसे

ऊँची चोटी है। यह समुद्र तल से लगभग 4430 फुट ऊँची है। **भाषा की बात–(क)** घंटियाँ, गुफ़ाएँ, मूर्तियाँ, धाराएँ, सीढ़ियाँ, घटाएँ, श्रेणियाँ, नदियाँ **(ख) रास्ता**–राह, मार्ग **दिन**–दिवस, वार **पेड़**–वृक्ष, तरु **समुद्र**–सागर, जलधि **पहाड़**–पर्वत, गिरि **(ग)** निर्मल, निर्बल, निर्जीव, निर्धन, निर्दोष, निर्गुण **(घ)** शाम, नीची, कुरूप, बाहर, पैर, भारी **करने की बारी**–स्वयं करें।

4. किसने पकाई, किसने खाई

(क) 1. बुढ़िया ने 2. कमज़ोर 3. लोमड़ी 4. फुस्स **(ख)** बुढ़िया ने पकाया, बूढ़े को बुलाया, मुझको खा न पाया, कुत्ते ने बुलाया, मुझको पकड़ न पाया, तू कैसे खाएगा? **(ग)** 1. बुढ़िया ने गोल-गोल रोटी पकाई। रोटी छोटी और मोटी थी। 2. सबसे पहले रोटी को पकड़ने के लिए बूढ़ा दौड़ा। 3. कुत्ते को रोटी बढ़िया लगी। 4. रोटी से गाना सुनाने के लिए लोमड़ी ने कहा। **भाषा की बात–(क)** घटिया, शहर, बड़ी, पतली, गंदा, अंदर **(ख) पानी**–जल, नीर **कुत्ता**–श्वान, कुक्कुर **मुख**–मुँह, आनन **हाथ**–हस्त, पाणि **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

6. पतंग

(क) 1. पतंग 2. सूर्य को 3. बादलों से 4. रॉकेट से **(ख)** बादलों से बातें करती है, बगुलों के साथ विचरती है। हिरनी-सी इंद्रधनुष वाले, आँगन में कूदी फिरती है। कितनी भी ऊँची चढ़ जाए, फिर भी रहती धरती के संग। उड़ चली गगन छूने पतंग। **(ग)** 1. कवि ने पतंग की तुलना मछली व रॉकेट से की है। 2. क्योंकि पतंग उसे उड़ाने वाले के हाथ की डोर से बँधी रहती है। 3. आकाश में पतंग इंद्रधनुष वाले आँगन में कूदी फिरती है। 4. पतंग को सैलानी इसलिए कहा गया है क्योंकि यह आकाश की सैर करती है। 5. पतंग को हिम्मतवाली इसलिए कहा गया है क्योंकि यह सूरज को छूना चाहती है। **भाषा की बात–(क)** मेघ, पानी, आकाश, मत्स्य, पृथ्वी, सूर्य, पर, शरीर **(ख)** धरा, थल, नई, नीची, छोटी **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

7. वीर बालिका

(क) 1. चित्तौड़ पर 2. राणा प्रताप का पुत्र 3. आधी रोटी 4. अतिथि को **(ख)** 1. अकबर 2. चंपा 3. बहलाना 4. गुलाम 5. अधीनता **(ग)** 1. महाराणा प्रताप चित्तौड़ के राजा थे। 2.महाराणा प्रताप को मुसीबतों का सामना इसलिए करना पड़ा क्योंकि उन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की थी। 3. चंपा ने अपने पिताजी को पत्र लिखने से इसलिए रोका क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि उसके पिता अकबर की अधीनता स्वीकार करके उसके सामने सिर झुकाएँ। 4. महाराणा प्रताप पास के अपने अतिथि को भोजन कराने के लिए कुछ नहीं था वे चिंतित थे कि उन्हें पहली बार अपने अतिथि को भूखा ही लौटाना पड़ेगा। 5. इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है। कि हमें अपने देश की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार रहना चाहिए। **भाषा की बात–(क) राजा**–नृप, नरेश **जंगल**–वन, अरण्य **बेटी**– सुता, पुत्री **अतिथि**– मेहमान, आगंतुक **(ख)** जीत, बड़ा, बुरा, पाना, गुलाम रंक **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** 1. भागे 2. लौटना पड़ेगा 3. लिखने लगे। 4. झुकाएँ। **करने की बारी**–स्वयं करें।

8. जामुन का पेड़

(क) 1. जामुन का 2. हल्के पीले रंग के 3. कसैला 4. ये दोनों **(ख)** 1. हरा-भरा 2. गिलहरियाँ 3. गुच्छों 4. वर्षा 5. काला बैंगनी **(ग)** 1. केशव को पेड़ पर चढ़कर जामुन खाना अच्छा लगता है। 2. जामुन खाने से खून साफ़ होता है और फोड़े-फुंसियाँ नहीं निकलती हैं। 3. जामुन की हरी-भरी टहनी को छीलकर ज़मीन में लगा देते हैं। देखभाल करने पर थोड़े दिनों में यह

टहनी नया पौधा बन जाती है। 4. जामुन के पेड़ की लकड़ी बहुत सख़्त और टिकाऊ होती है। काफ़ी समय तक पानी में रहने पर भी खराब नहीं होती है। इसलिए मछुआरे नाव बनाने में जामुन की लकड़ी का प्रयोग करते हैं। **भाषा की बात–(क)** शहर, मीठे, बुरा, अंदर, गंदा, आसमान, ज्यादा, मुलायम, बदबू, पुराना **(ख)** ग्राम, बाग, जल, नौका, कठोर, प्रतिदिन, रक्त, खग **(ग)** बगीचे, लकड़ियाँ, शाखाएँ, गिलहरियाँ, मछुआरे, टहनियाँ, चिड़ियाँ, गुच्छे **(घ)** बारिश, मौसम, फुंसियाँ, गिलहरी, खुशबू, कसैला, स्वाद, टिकाऊ **(ङ)** स्वयं करें। **करने की बारी–**स्वयं करें।

9. छिपकलियाँ और अंडे के छिलके

(क) 1. मच्छर 2. कूड़ेदान में 3. ऑक्सीजन 4. वृक्ष **(ख)** 1. फल मिलते हैं। 2. पत्ते मिलते हैं। 3. साफ करते हैं। 4. ईंधन देते हैं। **(ग)** 1. जहाँ कूड़ा होता है, वहाँ मच्छर आते हैं, मच्छर वहाँ अंडे देने के लिए आते हैं। 2. छिपकलियाँ मच्छरों को खाती हैं। यदि कमरे में छिपकलियाँ नहीं होंगी, तो मच्छरों की संख्या कम करने का एक यंत्र अनुपस्थित हो जाएगा और इस प्रकार मच्छरों की संख्या अपने-आप बढ़ जाएगी। 3. वृक्ष कार्बन-डाइ-ऑक्साइड लेकर तथा ऑक्सीजन छोड़कर वायुमंडल को स्वच्छ रखते है। 4. पेड़-पौधों के अलावा सारे जीव-जंतु और मनुष्य वनस्पति तथा उनके पत्तों, फूलों और फलों को खाकर ऊर्जा प्राप्त करते हैं। फिर, मनुष्य और बड़े पशु छोटे-छोटे जीव-जंतुओं को खाते हैं और अंत में छोटे-छोटे जीवाणु, जिन्हें हम 'बैक्टीरिया' कहते हैं, बड़े-छोटे वृक्षों, पशुओं तथा मनुष्यों को खा जाते हैं। इस प्रकार प्रकृति की ऊर्जा वापस प्रकृति में ही लौट आती है। **भाषा की बात–(क)** ढंग, माया, खड़ा, आड़ू, तंत्र, मोल, ठंडा, जल **(ख)** अंडे, छिपकलियाँ, डंडे, कुरसियाँ, पौधे, बिजलियाँ, कमरे, लकड़ियाँ **(ग)** प्रयत्न, प्रमाणित, संयोग, अनुमान, अनुपस्थित, संपूर्ण, छिपकलियाँ, पर्यावरण, सृष्टि, प्रकृति **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी–** स्वयं करें।

11. मन करता है

(क) 1. पंछी 2. जादू की छड़ 3. बादल 4. मोती **(ख)** बाहर सब कितना सुंदर है, भरा खज़ाना खुला हुआ है। तोड़-ताड़ कर बंधन सारे, झोली अपनी भर लाएँ हम। मन करता है। **(ग)** 1. 'हम' बच्चे हैं। 2. बच्चों का पंछी, परी, मछली, बादल बनने का मन करता है। 3. बच्चे पंछी बनकर सूर्य-चाँद से बातें करते हुए दूर-दूर स्थानों की यात्रा करना चाहते हैं। 4. बच्चों का मछली बनकर सागर से मोती चुनकर लाने का मन करता है। **भाषा की बात– (क) पंछी–**खग, विहग **सूरज–**सूर्य, दिनकर **चंदा–**चंद्रमा, हिमांशु **जल–**पानी, नीर **सागर–**समुद्र, रत्नाकर **(ख)** लाल गुलाब, काले बादल, सुंदर परियाँ, गहरा सागर, खुला आसमान, चंचल मछली **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** परियाँ, मछलियाँ, अठखेलियाँ, झोलियाँ, बातें, खज़ाने **करने की बारी–**स्वयं करें।

12. सावधानी हटी-दुर्घटना घटी

(क) 1. सड़कें 2. पैदल चलने वालों के लिए 3. लाल **(ख)** 1. 7 2. 7 3. 3 4. 3 **(ग)** 1. सड़क को बहुत सँभलकर पार करना चाहिए। ऐसा नहीं, कि कहीं से भी सड़क पार कर ली जाए। ऐसा करने से दुर्घटना होने का ख़तरा है। हमें सदा 'पारपथ' से ही सड़क पार करनी चाहिए। सड़क पार करने से पहले यह देख लेना चाहिए, कि सड़क पर आगे बढ़ने के लिए कहीं हरी बत्ती तो नहीं जल गई है। लाल बत्ती जलने पर ही पहले दाएँ, फिर बाएँ देखकर सड़क पार करनी चाहिए। 2. हमें गाड़ी से शरीर का कोई भी अंग बाहर इसलिए नहीं निकालना चाहिए क्योंकि कभी-कभी इससे दुर्घटना हो जाने का डर रहता है। 3. दो बातों का ध्यान रखना चाहिए–पहली बात तो यह है,

कि पापा या मम्मी जब कार चला रहे हों, तो उनसे यह नहीं कहना चाहिए कि– ''और तेज़ चलिए। उस गाड़ी से आगे निकाल लीजिए।'' दूसरी बात यह है, कि अपना हाथ या मुँह गाड़ी की खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए। 4. बस, कार, ट्रक, ऑटोरिक्शा, मोटर साइकिल। **भाषा की बात–(क)** दुर्घटना, ध्यान, स्कूटर, खिड़की, स्थिति, प्रमुख **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. काम्या, शिक्षक 2. सड़क, मोटरें, कारें 3. मम्मी-पापा, कार 4. गाड़ी, खिड़की, मुँह, हाथ **करने की बारी–**स्वयं करें।

13. अभ्यास का महत्व

(क) 1. मंदबुद्धि बालक 2. तीन-तीन साल 3. विद्वान 4. सत्तू **(ख)** 1. 7 2. 7 3. 3 4. 3 5. 3 **(ग)** 1. वरदराज एकदम मंदबुद्धि बालक था। उसे कुछ भी याद नहीं रहता था। वह एक साल की पढ़ाई में तीन-तीन साल लगाता था। इसलिए सहपाठी उसका मज़ाक उड़ाते थे। 2. गुरुजी ने वरदराज से घर चले जाने के लिए इसलिए कहा क्योंकि गुरुजी को लगा कि पढ़ना-लिखना वरदराज के वश की बात नहीं। 3. वरदराज को पढ़ने-लिखने की प्रेरणा कुएँ के पत्थर पर रस्सी के निशान देखकर मिली। उसके दिमाग में विचार आया कि बार-बार की रगड़ से पत्थर पर रस्सी के निशान बन सकते हैं तो फिर क्या लगातार परिश्रम से मुझे पढ़ना-लिखना नहीं आ सकता। 4. इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अभ्यास एवं कठोर परिश्रम से असंभव को संभव बनाया जा सकता है। **भाषा की बात–(क)** साक्षर, सायं, कोमल, कल, बूढ़ा, दुर्भाग्य **(ख)** आशाहीन, मस्तिष्क, अध्यापक, उम्र, जनक, क्षण, स्मरण **(ग)** मंदबुद्धि, विद्वान, सहपाठी, सिद्धांत, प्रसिद्ध, निराश **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** वरदराज एकदम मंदबुद्धि बालक था। उसे कुछ भी याद नहीं रहता था। उसके सहपाठी पढ़ाई में उससे आगे बढ़ जाते थे। वह एक साल की पढ़ाई में तीन-तीन साल लगाता रहा। सहपाठी उसका मज़ाक उड़ाते। कोई उसे बुद्धू कहता, तो कोई मूर्खराज। कोई कहता-जब ब्रह्माजी बुद्धि बाँट रहे थे, तब यह सोया हुआ था। **करने की बारी–**स्वयं करें।

14. हाथ का रहस्य

(क) 1. मुंबई से पुणे 2. कार 3. चाय की दुकान पर **(ख)** 1. 3 2. 7 3. 3 4. 7 **(ग)** 1. पहाड़ियों से गिरते झरने बहुत सुंदर लग रहे थे। सूरज अपने सुनहरे रंग में अस्त हो रहा था। चारों ओर सुहावने दृश्य थे। तन-मन को प्रसन्न करने वाली ठंडी हवा चल रही थी। 2. रोशनी को देखकर गौरव ने साहस किया और कार से कूद पड़ा। वह तेज़ी-से रोशनी की ओर भागा। यह एक छोटी-सी चाय की दुकान थी। 3. गौरव को ठंड में भी इसलिए पसीना आ गया क्योंकि जिस कार में वह बैठा था उस कार में कोई था ही नहीं। कार खुद अपने आप चल रही थी। कोई भी कार को नहीं चला रहा था। 4. चाय की दुकान पर खड़े सभी लोग गौरव के भयानक अनुभव को सुनकर हैरान हो गए। **भाषा की बात–(क)** पहाड़ियाँ, रास्ते, झरने, बातें, दुकानें, इशारे **(ख)** 1. कार 2. इंच 3. स्टेयरिंग 4. ऑफिस 5. सीट **(ग)** 1. खूबसूरत 2. सुंदर 3. सुनहरे 4. हल्की-सी 5. छोटी-सी **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी–**स्वयं करें।

16. ये पल यहीं ठहर जाते

(क) 1. बचपन का और आनंद लेते 2. पैरों से दौड़ लगाते 3. दूध पीने का मन न होना **(ख)** दादी माँ से जिद कर नियमित कथा-कहानी सुनना, राजा-रानी, परीलोक के अनगिन किस्से

बुनना, खरहे-सा भागता पहर रुक जा, थम जा, यहीं ठहर! **(ग)** 1. कवि को बचपन में आम चुराते समय लकड़ सुंघवा का डर रहता था। 2. बारिश के मौसम में कवि को जान-बूझकर भीग-भीगकर खूब नहाना अच्छा लगता था। 3. दादी माँ से नियमित कथा-कहानी सुनने की जिद की जाती थी। 4. कविता में बचपन के पतंग लूटने, बगिया से आम चुराने, बारिश में भीगने तालाब में कागज की नाव तैराने, मेंढक बनकर टर्र-टर्र करने आदि के क्षणों को ठहरने के लिए कहा गया है। **भाषा की बात–(क) पर्वत**–नग, पहाड़ **नदी**–सरिता, तरंगिणी **नैया**–नाव, नौका **(ख)** तलैया, उधर, कहानी, तूफान, भटका, गुनगुनाते **(ग)** नदियाँ, नावें, बिल्लियाँ, बछड़े, बस्ते, किस्से **(घ)** अनियमित, बुढ़ापा, मीठा, रात **करने की बारी**–स्वयं करें।

17. वृक्ष लगाओ

(क) 1. पेड़ों पर 2. नीम को 3. ये दोनों 4. केला 5. गोपी **(ख)** 1. पीपल के पेड़ ने गोपी से 2. माधव ने पीपल के पेड़ से 3. आम के पेड़ ने बच्चों से 4. नीम के पेड़ ने बच्चों से 5. तुलसी के पौधे ने बच्चों से **(ग)** 1. पीपल एक ऐसा वृक्ष है, जो दिन-रात हमारे जीवन के लिए आवश्यक शुद्ध वायु ऑक्सीजन छोड़ता है। इसकी छाल औषधि के रूप में प्रयोग की जाती है। इसके ऊपर सैकड़ों पक्षियों को रहने के लिए आश्रय मिलता है। 2. आम के वृक्ष ने बच्चों को अपने ये लाभ बताए–''मेरे मीठे फलों के साथ-साथ लकड़ियाँ भी बहुत उपयोगी हैं। मेरी लकड़ी से फर्नीचर-कुर्सी, मेज, पलंग आदि बनते हैं। मेरे फल इतनी किस्मों के तथा इतने स्वादिष्ट होते हैं, कि मैं फलों का राजा कहलाता हूँ। मैं रक्तशोधक हूँ। 3. नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर उससे स्नान करने से चर्म रोग दूर होते हैं, नीम की टहनी की दातुन से सभी दाँतों के रोग दूर हो जाते हैं। 4. नीम की छाल फोड़े-फुँसियों को ठीक करती है। 5. वृक्षों से हमें अनाज, फल, फूल, रबड़, कपड़े मिलते हैं। हम वृक्षों को न काटकर उनहें बचा सकते हैं। **भाषा की बात–(क)** अनुपयोगी, अशुद्ध, बड़ा, रंक, भूत, मोटी, पक्का, कड़वा **(ख)** दरवाज़े, किरणें, शाखाएँ, औषधियाँ, घोंसले, पत्ते, पौधे, टहनियाँ **(ग)** 1. शक्तिदायक 2. रोगनाशक 3. ज्वरनाशक 4. वार्षिक 5. मासिक **करने की बारी**–स्वयं करें।

18. बड़ा कौन है?

(क) 1. मंत्री 2. ये दोनों 3. वाराणसी 4. हजारी प्रसाद द्विवेदी **(ख)** 1. कौशलराज के सारथि ने काशीराज के सारथि से 2. कौशलराज के सारथि ने काशीराज के सारथि से 3. काशी के राजा ने राजमहल के आदमियों से 4. काशीराज के सारथि ने कौशलराज के सारथि से **(ग)** 1. काशीराज यह जानना चाहते थे कि उनके अंदर क्या दोष है। 2. कौशलराज अपना दोष खोजने के लिए घूम रहे थे। कहीं पर किसी प्रकार का दोष अपने अंदर न पाकर, वे अपनी राजधानी की ओर लौट रहे थे। 3. दोनों रथों के सारथि चाहते थे कि सामने वाला सारथि अपना रथ पीछे हटा ले। 4. काशीराज क्रोधी को प्रेम से जीतते थे, दुष्ट को सज्जनता से अपने वश में करते थे, कंजूस को दानवीरता से अपने वश में करते थे, तथा झूठ को सच के बल पर जीतते थे। 5. बड़े काशीराज सिद्ध हुए क्योंकि वे दुष्ट के साथ भी अच्छा व्यवहार करते थे और अपनी विनय से उसकी दुष्टता को जीत लेते थे। **भाषा की बात–(क)** अवगुण, सरल, दुःखी, शत्रु, असमान **(ख)** रानी, सम्राट, घोड़ी, विद्वान, अध्यापक, कवयित्री **(ग)** 1. राजा, सारथि, चरित्रवान, दानवीर **करने की बारी**–स्वयं करें।

19. चतुर चरवाहा

(क) 1. पहेली का जवाब 2. फर की टोपी देखकर 3. मनुवा की चतुराई **(ख)** 1. मनुवा ने स्वयं से 2. घुड़सवार ने मनुवा से 3. घुड़सवार ने मनुवा से 4. मनुवा ने घुड़सवार से 5. घुड़सवार ने मनुवा से **(ग)** 1. मनुवा ने ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर कहा, "मैंने पहेली बूझ ली, मैंने पहेली बूझ ली।" 2. पहेली थी–''वह क्या चीज़ है, जो आदमी से ऊँची भी है और मुरगी से छोटी भी।'' नुवा ने पहेली का उत्तर खोजा–फर की टोपी। फर की टोपी मुरगी से छोटी है, पर जब पहन ली जाती है, तो आदमी से ऊँची हो जाती है। 3. घुड़सवार ने मनुवा को बाँसुरी इसलिए दी क्योंकि वह चाहता था, कि जितने सुंदर मनुवा जवाब देता था, उतनी ही अच्छी तरह वह बाँसुरी भी बजाए। 4. मनुवा में विशेष बात यह थी कि वह हाजिर जवाब था। **भाषा की बात–(क)** भेड़ें, बाँसुरियाँ, घोड़े, पहेलियाँ, सड़कें, टोपियाँ, आवाज़ें, छड़ियाँ **(ख)** 1. को 2. पर 3. के लिए 4. में 5. से 6. की 7. ने **(ग)** 1. भविष्यत्काल 2. वर्तमानकाल 3. भूतकाल **करने की बारी–**स्वयं करें।

20. बरगद का वृक्ष

(क) 1. भेड़-बकरियाँ चराने 2. छाया देकर 3. पत्तों के कीड़े खाकर **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. बरगद का वृक्ष विशाल था। उसका तना लंबा, मोटा था। उसके पत्ते घने थे। उसकी शाखाएँ चारों ओर फैली थीं। उसकी शाखाओं से जटाएँ निकलकर धरती तक आ रही थीं। 2. जब लड़का सो रहा था, तो बरगद के एक-दो फल उसके मुँह पर आ गिरे। 3. पेड़ के आस-पास कई पत्तियाँ सड़ती रहती हैं। केंचुए इन सड़ी पत्तियों को खाने के लिए ज़मीन के नीचे से निकलते हैं। इससे मिट्टी को हवा मिलती है। जिससे पेड़ की जड़ों को शक्ति मिलती है और वे मजबूत रहती हैं। 4. बरगद के वृक्ष ने लड़के को समझाया कि किसी को छोटा या कम समझना बुद्धिमानी की बात नहीं है, यह तो घमंड करना है और घमंड करना तो किसी के लिए भी उचित नहीं। अब देखो, मैंने अपनी छाया देकर तुम्हें धूप-ताप से बचाया। मेरे तने ने तुम्हें सहारा दिया। मेरी पत्तियों से छनकर हवा शीतल हुई। तुम्हें सुख मिला और तुम सो गए। चिड़ियाँ मुझ पर बसेरा करती हैं और मेरे छोटे-छोटे मीठे फल खाती हैं। देखो तो, प्रकृति कितने सुंदर ढंग से अपना काम करती है! **भाषा की बात–(क)** 1. मैं 2. मैंने 3. तुम्हारा 4. हम 5. उसने **(ख)** 1. तुम्हें यह कहानी कैसी लगी? 2. बच्चे खेलने गए। 3. हेमा, नीलम, पंकज और मनोज ने पौधे लगाए। 4. तुम कहाँ जा रहे हो? 5. ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। **(ग)** 1. ने 2. में 3. से 4. पर 5. को **(घ) पेड़–**वृक्ष, तरु **धरती–**पृथ्वी, धरा **वन–**जंगल, अरण्य **फूल–**कुसुम, प्रसून **चिड़िया–**खग, पक्षी **(ङ)** आकाश, लघु, सरदी, उद्दंडता, दंड, कुरूप **करने की बारी–**स्वयं करें।

21. दोहे

(क) 1. तालाब 2. घड़ा 3. ये दोनों 4. लालच **(ख)** सुजान, कब, होय, माहिं, धूप, पौन, बलाय **(ग)** 1. सज्जन लोग संपत्ति का संचय परोपकार के लिए करते हैं। 2. विद्या धन परिश्रम से प्राप्त किया जा सकता है। 3. मक्खी के गुड़ में चिपक जाने का उदाहरण देकर कवि यह सीख दे रहे हैं कि हमें लालच नहीं करना चाहिए। 4. हमें आने वाले कल का कार्य आज ही इसलिए कर लेना चाहिए क्योंकि आने वाले कल में कोई बाधा पड़ने पर हो सकता है कि कार्य करने का अवसर ही न मिले। **भाषा की बात–(क) वृक्ष**-तरु, पेड़ **पानी**- जल, नीर **हवा**-वायु, समीर **हाथ**-कर, पाणि **कौआ**-काक, वायस **(ख)** दुर्जन, भरा, हँसना, आज, सफेद, कड़वी, घटाना, कम **(ग)** 1. पवन 2. ऋतु 3. कण-कण 4. प्रलय 5. कल **करने की बारी–**स्वयं करें।